7

प्रातः क्लास 19-7-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्तिः बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। वास्तव में दोनो ही बाप है। एक हद का, दूसरा बेहद का। यह भी बाप है, वह भी बाप है। बेहद का बाप आकर पढ़ाते हैं। बच्चे जानते हैं हम नई दुनिया सतयुग के लिए पढ़ रहे हैं। ऐसी पढ़ाई कहां मिल नहीं सकती। तुम बच्चों ने तो सतसंग बहुत ही किये हैं। तुम भक्त थे ना। जरूर गुरु किये हुये हैं, शास्त्र अध्यन किये हुये हैं। परन्तु अभी बाप ने आकर जगाया है। बाप कहते हैं अभी यह पुरानी बदलनी है। अभी मैं तुमको नई दुनिया में लिए पढ़ाता हूं। तुम्हारा टीचर भी हूं ना। कोई भी गुरु टीचर नहीं कहेंगे। स्कूल में टीचर पढ़ाते हैं जिससे ऊंच पद पाते हो। परन्तु वह पढ़ाई है यहां के लिए। अभी तुम जानते हो हम जो पढ़ते हैं वह यहां के लिए नहीं है। यह तुम्हारी पढ़ाई है भविष्य के लिए। कोई भी स्टुडन्ट पढ़ते हैं यहां इस पुरानी दुनिया के लिए। तुम समझते हो हम पढ़ते हैं नई दुनिया के लिए। नई दुनिया को ही गोल्डेन एजेड वर्ल्ड कहा जाता है। यह तो जानते हो ना यह पढ़ाई है ही भविष्य के लिए। इस समय आसुरी गुणों को बदल कर दैवी गुण धारण करनी है। यहां तुम बदलने लिए आते हो ना। कैरेक्टर्स की महिमा की जाती है। देवताओं के आगे जाकर कहते हैं ना आप ऐसे 2 हैं। हम ऐसे 2 हैं। तुमको अभी ऐम आब्जेक्ट मिली है भविष्य के लिए। बाप नई दुनिया भी स्थापन करते हैं और फिर तुमको पढ़ाते भी हैं। वहां तो विकार की बात ही नहीं। बच्चे जानते हैं हम रावण पर जीत पहनते हैं। रावण राज्य में हैं ही सभी विकारी। यथा राजा-रानी तथा प्रजा सभी विकारी ही हैं। अभी तो है ही पंचायती राज्य। इनके पहले राजा रानी का राज्य था। परन्तु वह भी पतित थे। जो भी पतित राजायें हैं उन्हों के पास मंदिर भी होते हैं। निर्विकारी देवताओं की पूजा करते हैं। जानते हैं देवी-देवतायें पास्ट में होकर गये हैं। अभी तो निर्विकारी राज्य है नहीं। आत्मायें वही यहां है परन्तु शरीर नाम-रूप भिन्न 2 लेते आये हैं। बाप आत्माओं को याद दिलाते हैं। तुम यह देवी देवता शरीर वाले थे। तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों ही पवित्र थी। अभी फिर से बाप आकर पतित से पावन बनाते हैं। अर्थात भ्रष्टाचारी को श्रेष्ठाचारी बनाते हैं। इसलिए ही तुम आते हो। बाप पहले 2 आर्डीनेन्स निकालते हैं बच्चे काम महाशत्रु है। यह तुमको आदि मध्य अन्त दुःख देते आये हैं। अभी तुमको गृहस्थ व्यवहार में रहते पावन बनना है। ऐसे नहीं देवी-देवतायें कोई आपस में प्यार नहीं करते हैं होंगे, बाकी नहीं पहनते होंगे परन्तु वहां विकारी दृष्टि नहीं रहती है। बाप भी कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान रहो। अपना भविष्य ऐसा बनाना है। जैसे तुम पवित्र थे। ऐसा बनना है। हरेक आत्मा अपना नाम-रूप लेकर पार्ट बजाती है। अभी तुम्हारा है यह अन्तिम पार्ट। पवित्रता के लिए भी बहुत पूछते हैं कि क्या करें। कैसे कम्पेनीयन हो रहें। कम्पेनीयन (साथी) हो रहने का भी अर्थ क्या है। विलायत में जब बूढ़े होते हैं तो फिर कम्पेनीयन रखने लिए शादी करते हैं। सम्भाल करने के लिए। ऐसे बहुत हैं जो ब्रह्मचारी रहना पसन्द करते हैं। सन्यासियों-उदासियों आद की तो बात ही अलग है। गृहस्थ में रहने वाले भी बहुत होते हैं जो शादी करना पसन्द नहीं करते हैं। यह एक उपाधी समझते हैं। शादी करना फिर बाल बच्चों आद की सम्भाल करना कौन झंझट में पड़ेगा। जाल फैलावें ही क्यों जो खुद ही फंस मरे। ऐसे बहुत यहां भी आते हैं। 40 वर्ष हो गये ब्रह्मचारी रहते हैं। इसके बाद क्या शादी करेंगे। स्वतंत्र रहना पसन्द करते हैं। तो बाप उन्हों को भी देखकर खुश होते हैं। समझते हैं यह तो है ही बन्धन रहित। बाकी रहा शरीर का बन्धन। इसमें देह सहित सभी कुछ भूलना होता है। सिर्फ एक बाप को ही याद करना है। और कोई भी देहधारी को नहीं। क्राईस्ट बुध आद सभी देहधारी ही थे। जरूर पुनर्जन्म में आवेंगे। निराकार शिव तो देहधारी नहीं है। उनका नाम ही है शिव। शिव का भी मंदिर भी है। तुम्हारी आत्मा को आत्मा ही कहा जाता है। फिर शरीर का नाम रखा जाता है। आत्मा का नाम नहीं रखा जाता। नाम जीवात्मा का रखा जाता है। आत्मा को आत्मा ही कहें। आत्मा आत्मा ही है। उनको पार्ट मिला हुआ है 84 जन्मों का। यह भी समझाया है यह अविनाशी ड्रामा है। इसमें कुछ भी बदली नहीं हो सकता।

84 जन्म पूरी कर पहला नम्बर जन्म लेना पड़ेगा। यह तो जानते हो पहले2 हमारा धर्म-कर्म जो श्रेष्ठ था वह अभी भ्रष्ट बन गया है। ऐसे नहीं कि देवी-देवता धर्म ही खत्म है। गाते भी देवताएं सर्वगुण सम्पन्न 16कला सम्पूर्ण थे। यह महिमा देवी देवताओं के लिए हो गाये जाते हैं। ल0ना0 दोनो ही पवित्र थे। पवित्र प्रवृति मार्ग था। अभी है अपवित्र प्रवृति मार्ग। 84 जन्मों में भिन्न2 नाम रूप देश-काल ~~फिर~~ पिरता है। यहतो समझते हो 84 का चक्र जरूर है। बाप ने बताया है मीठे2 बच्चों तुम अपने जन्मों को नहीं ~~जानते~~ जानते हो। एक ~~ह~~ का बात नहीं। मैं तुम्हारी 84 जन्मों की कहानी सुनाता हूं। तो जरूर पहले जन्म से ही लेकर समझाना पड़े। तुम देवी देवता धर्म वाले पवित्र प्रवृति मार्ग वाले थे फिर पुनर्जन्म लेते2 विकारी बने हो तो देवताओं के आगे जाकर ~~मस्त~~ माथा टेकते हो। क्रिश्चन लोग क्राईस्ट लोग को, बोधी लोग बुध को, नानक वाले नानक के दरबार में जावेंगे। उससे मालूम पड़ता है यह किस धर्म का है। तुम्हारे लिए तो कह देते हैं यह हिन्दु है। आदी सनातन देवी-देवता धर्म कहां गया। किसको भी पता नहीं है। प्रायः लोप हो गया है। चित्र है, भक्ति मार्ग के लिए भारत मे चित्र तो अनेक बनाये हैं। भिन्न2 बनाते रहते हैं। मनुष्यों की भी अनेक मतें हैं। शिव के भी अनेक नाम रख दिये हैं। असल में उनका एक ही नाम शिव है। ऐसे भी नहीं उसने पुनर्जन्म लिया है तब नाम पिराते जाते हैं। नहीं। मनुष्यों की अनेक मतें हैं। तो अनेक नाम रख दिये हैं। श्रीनाथ द्वारे में जाओ वहां भी वेदे तो वही ल0ना0 है, फिर दूसरे जगह में जाओ तो कहेंगे यहल0ना0 का मंदिर है। जगतनाथ के मंदिर में भी मूर्ति तो वही है। नाम भिन्न2 रख देते हैं। यह भक्तिमार्ग हैं। अभी तो तुम भक्ति मार्ग में नहीं हो। जब तुम सूर्यवंशी थे तो पूजा आद भी नहीं करते थे। तुम सारे विश्व पर राज्य करते थे। अभी तुम समझते हो हमारा जो आदी सनातन देवी-देवता धर्म पाउन में तो बहुत ही सुखी थे। हमारा राज्य था। श्रीमत पर श्रेष्ठ राज्य स्थापन किया था। उनको कहा ही जाता है ~~सुखधाम= सुख= सु~~ सुखधाम। और कोई ऐसे नहीं कहेंगे किहमको बाप पढ़ाते हैं। मनुष्य से देवता बनाते हैं। तुम बच्चों को याद है। बरोबर देवी-देवताओं का राज्य था ना। निशानी भी है। सिर्फ उन्हों का ही राज्य था। वहां किले आद भी होते नहीं। यहां किले आद बनाते हैं सेफ्टी के लिए। इन्हों के राज्य में किले आद थे नहीं। दूसरा कोई चढ़ाई करने वाला होता ही नहीं तो किले बनाने की दरकार ही नहीं। अभी तुम समझते हो हम उस एक ही धर्म में ट्रान्सफर हो रहे हैं। 84 जन्मों बाद फिर फिर पहला नम्बर देवी-देवता जन्म में जावेंगे। इसके लिए ही तुम पढ़ते हो। तुम पढ़ते ही हो राजाई के लिए। भविष्य में राजाओं का राजा बनेंगे। भगवानुवाचः मैंतुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। अभी तो राजा रानी कोई है नहीं। प्रजा का राज्य है। घोर-अंधियारा लगा पड़ा है। कितने लड़ाई झगड़े आद होते रहते हैं। यह तो सभी जानते हैं कलियुग है आयरनएजेड वर्ल्ड। गोल्डेनएजेड वर्ल्ड होकर गया है। सिलवर एजेड वर्ल्ड होकर गया है। तुम कहेंगे हम आयरनएजेड थे। अभी फिर हम पुरूषोत्त संगम युग पर खड़े हैं। अभी न आयरन एज में हैन गोल्डेन एज में हैं। तुम अभी पुरूषोत्तम संगम युग पर खड़े हो। बाप तुमको पहले नम्बर में ले जाने आये हैं। सभी का ~~कल्~~ कल्याण करते हैं। तुम जानते हो हमारा भी कल्याण होता है। पहले2 हम जरूर सतयुग में जावेंगे। बाकी जो भी धर्म के हैं वह सभी शान्तिधाम में चले जावेंगे। बोधी क्रिश्चन आद तो सतयुग में नहीं आवेंगे। तो यहां आकर पढ़ेंगे भी नहीं। तुम हो देवी देवता धर्म के। तुमको यह सारा सृष्टि का चक्र का राज़ समझाया जाता है। फिर बाप कहते हैं सभी को पवित्र भी बनना है। तुम हो ही पवित्र देश के रहने वाले। जिसको मुक्तिधाम, शान्तिधाम, निर्वाणधाम कहा जाता है। वाणी से परे। सिर्फ आत्मायें रहती हैं। शरीर होगा तो वाणी जरूर होगी। तुमको अभी वाणी से भी परेले जाते हैं। ऐसा तो कब कोई कह न सके कि हम तुमको निर्वाण-धामशान्तिधाम ले जाते हैं। वह तो कहते हैं हम ब्रहम में लीन होंगे। तुम बच्चे जानते हो हम अभी तमोप्रधान दुनिया में हैं। इसमें तुमको स्वाद नहीं आवेगा। यह भी तुम जानते हो नई सृष्टि की स्थापना करने और पुरानी दुनिया का विनाश लिये ही भगवान को यहां आना पड़ता है। शिवजयन्ति भी यहां मनाते हैं। तो क्या आकर

करते हैंकोई बताये।जयन्ती मनाते तो हैं ना।जरूर वह आते हैं रथ पर विराजमान होकर।उन्हों ने फिर घोड़े-गाड़ी का रथ दिखाया है।बाप बैठ बताते हैं मैंकिस रथ पर सवार होता हूं।बच्चों को बताता हूं।फिर यह ज्ञान प्रायः लोप हो जाता है।इनके 84 जन्मों के अन्त में बाबा को आना पड़ता है। यह ज्ञान कोई दे न सके।बाकी सभी शास्त्र आदि हैं भक्ति मार्ग के।ज्ञान है दिन,भक्ति है रात।नीचे उतरते ही रहते हैं' भक्ति का शो बहुत है। कितना कुम्भ का मेला लगता है।ऐसे कोई भी नहीं कहता कि अभी तुमको पवित्र बनकर नई दुनिया में जाना है।यह कोई भी कह न सके। बाबा ही बताते हैं' अभी संगम युग है।तुमको पढ़ाई भी वही मिलती है जो कल्पपहले मिलीथी। मनुष्य से देवता बनने। बायन भी है मानुष से देवता ...जरूर बाप ही बनावेंगे ना। तुम जानते हो हम अपवित्र गृहस्थ धर्म वाले थे। अभी बाबा आकर फिर पवित्र प्रवृति मार्ग का बनाते हैं। तुम बहुत ऊंच पद पाते हो। ऊंच ते ऊंच बाप कितना ऊंच बनाते हैं। बाप की है श्रीमत।अर्थात श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत।हम श्रेष्ठ यह बनते हैं।श्रीमत के अर्थ का सन्यासियों को पता नहीं है।एक शिव बाबा ही श्रेष्ठ बनाने वाला है।इसलिए उनका ही श्रीश्री का टाईटल है।परन्तु वह फिर अपने को श्री2 कह देते हैं। माला फेरी जाती है।माला है 108 की। उन्हों ने 16108 की बनाई है।उन में भी आठ तोआते ही हैं। चार जोड़ी और एक बाप।आठ रत्न और नव हूं में।उनको नवरत्न कहते हैं।इन्हों का ऐसा रत्न बनाने वाला बाप ही है। बीच में। तुम बाप द्वारा कितने पारस बुधि बनते हो।रंगून में एक तालाब है कहते हैं इन में स्नान करने से परियां बन जाती हैं।वास्तव में है यह ज्ञान स्नान। जिससे तुम देवता बन जाते हो। बाकी वह तो सभी हैं भक्ति मार्ग की बातें। बाप समझाते हैं यह तो हो भी नहीं सकता।पानी में स्नान करने से परी बन जाये। यह सभी है भक्ति मार्ग।क्या2 बातें बना दी है। कैलाश पर्वत पर अमरनाथ ने पार्वती को अमरकथा सुनाई। फिर यह हुआ अमर पुरी चले गये।क्या2 लिख दिया है। कुछ भी समझते नहीं।अभी तुम समझते हो हमारा ही यादगार दिलवाला, गुलशेखर है। बाप बहुत ऊंच रहते हैं ना।तुम जानते हो आ बाप और हम आत्मायें कहां निवास करते हैं।वह है मूलवतन।सूक्ष्मवतन तो सिर्फ साकार मात्र है। वह कोई दुनिया नहीं है।सूक्ष्मवतन के लिए ऐसे नहींकहेंगे कि वर्ल्ड हिस्ट्री रिपीट। न मूलवतन के लिए कहेंगे। वर्ल्ड तो एक ही है ना। और कुछ है नहीं। इस वर्ल्ड की हिस्ट्री रीपीट कहा जाता है।मनुष्य कहते हैं विश्व में शान्ति हो।यह जानते नहीं कि आत्मा का स्वधर्म ही शान्त है।बाकी जंगल में थोड़ी ही शान्ति मिल सकती है। तुम बच्चों को सुख शान्ति सभी कुछ मिल जाती है।पहले शान्तधाम में जाकर फिर सुखधाम में आवेंगे।कई कहेंगे हम ज्ञान नहीं लेवें।पिछाड़ी में आवेंगे तो बाकी इतना समय मुक्ति में रहेंगे।यह तो अच्छा है। बहुत समय मुक्ति में रहेंगे। यहां कर के एक दो जन्म पद पावेंगे।वहक्या हुआ।जैसे मच्छर निकलते औरयह मरे।रात को कितने ढेर मच्छड़ निकलते उड़ते हैं, फिर सुबह को देखो तो खत्म हुये पड़े हैं।ऐसा जन्म तो जनावर, पक्षियों आद का भी होता है।मनुष्य का भी ऐसा जन्म हो तो फर्क ही क्या रहा।मनुष्य का ऐसा तो न होना चाहिए ना। देवता बन न सके।एक जन्म में यहां क्या सुख रखा है।थोड़ी बड़ाई होगी।बस।जैसे मच्छड़।एक जन्मलेना।वह तो कोई काम का न रहा।जैसे कि पार्ट ही नहीं। तुम्हारा पार्ट तो बहुत ऊंच ते ऊंच है।तुम्हारे जितना सुख और कोई देख न सके।इसलिए पुरुषार्थ करना चाहिए।करते भी रहते हैं। कल्प पहले भी तुम ने पुरुषार्थ किया है था। अपने पुरुषार्थ अनुसार प्रारब्ध पाई थी।पुरुषार्थ बिगर तो प्रारब्ध पा न सके।पुरुषार्थ जरूर करना है। बाप कहते हैं यह भी ड्रामा बना हुआ है। तुम्हारा भी पुरुषार्थ होता है ड्रामाके प्लेनअनुसार। इससे यह नहीं समझना है ड्रामा अनुसार आपे ही पुरुषार्थ चल पड़ेगा।ऐसे तो चल न सके।तुमको पुरुषार्थ जरूर करना पड़े।पुरुषार्थ बिगर थोड़ेई कुछ होता है।खांसी आपे ही कैसे उतरेगी।दवाई, गोली आद लेने का पुरुषार्थ करना पड़े ना।कोई2 ऐसे भी ड्रामा पर बैठ जाते हैं। जो ड्रामा में होगा।ऐसे उल्टा ज्ञान बुधि में नहीं बैठ बिठाना है। यह भी माया विघ्न डालती है। बच्चे पढ़ाई को ही छोड़ देते हैं।इसको ही कहा जाता है माया से हार। लड़ाई ना।

लड़ाई है ना। वह भी जबरदस्त है। इसलिए गाया जाता है गज को ग्राह ने खाया। समुद्र के अन्दर भी बहुत बड़े2 जीव होते हैं। इतने बड़े होते हैं जो स्टीमर खड़ा हो जाता है। बहुत ताकत वाले होते हैं। सतयुग में तो यह स्टीमर आद होते ही नहीं। दरकार ही नहीं। विमान होंगे वह भी सुख के लिए। दुःख की कोई बात होती ही नहीं। फुल प्रुफ होते हैं। इस समय सांयस का भी कितना जोर है। 100 वर्ष कितने बिजली आद की उन्नति हुई है। तो मीठे2 बच्चों को बाप समझाते हैं यह ड्रामा है। एक सेकण्ड न मिले दूसरे से। सेकण्ड पास हुआ, मिनट पास हुआ, घंटा पास हुआ ऐसे होते2 5000 वर्ष हो गये। 5000 वर्ष में कितने मास, कितने घंटे कितने मिनट कितने सेकण्ड होंगे। हिसाब निकाल सकते हैं। कोई होशियार बच्चा हो तो झट झट हिसाब निकाल सकते हैं। 5000 वर्ष की बात है। हिसाब निकालने में थोड़ा माथा मारना पड़ेगा। इतना ही टाईम याद की यात्रा में रहो तो कितने पाप कट जायें। परन्तु हर्जा थोड़े ही है। हिसाब निकालने में बहुत2 कर के एक घंटा लगेगा। तुमको अभी अपने 84 जन्मों की स्मृति आई है। इसलिए बाप कहते हैं 84 का चक्र बुधि में फिराते रहना है। अभी यह है अन्तिम जन्म। फिर पहले नम्बर में जाना है। नई दुनिया सिवाय तुम्हारे और कोई जा नहीं सकते। क्योंकि पतित आत्मायें हैं। सतयुग में होते हैं पावन आत्मायें। इसलिए वहां पतित पावन को बुलाने की दरकार ही नहीं। यहां पुकारते हैं हे पतित-पावन ·· क्योंकि सभी पतित हैं ना। सभी हैं भक्त। राम एक ही है। वह है सभीका ब्राईडग्रुम। तुम सभी को भक्ति के सागर। वह है ज्ञान का सागर। भक्ति के सागर सभी दुःखी है। ज्ञान सागर से सदैव सुख ही मिलता है। ड्रामा में भी क्लीयर दिखाया हुआ है। निवृति मार्ग वाले आते ही हैं बाद में। सन्यासियों में भी कोई भ्रष्ट होकर गृहस्थी में आ जाते हैं। गृहस्थियों से फिर सन्यास में चले जाते हैं। ऐसे भी होता है। अभी तुम जानते हो सभी आत्मायें अपने2 धर्म में अपने स्थान में जाकर बैठेंगी। सारा ड्रामा का, मूलचतन का, भी राज़ बता दिया है। बाप बच्चों को सारी नालेज देंगे ना। क्योंकि मनुष्य सृष्टि का बीज है। मनुष्य सृष्टि को वैराईटी धर्मों का झाड़ भी कहा जाता है। इसलिए विराट रूप भी बनाया जाता है। यह बड़ी समझ की बात है। पढ़ाई है। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते उस आमदनीका भी उपाय करना है। धंधा आद करना है। नहीं तो घर कैसे सम्भालेंगे। वह करते हुये बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो पाप कट जावेंगे। बाबा ऐसे नहीं कहते हैं कि छोड़ो। इसने कोई को भी छुड़ाया नहीं। यह ड्रामा की भावी बनी हुई थी। बाबा ने तो एक को भी नहीं कहा कि छोड़ो। कितने बान्धेली भी थी। कोई के मां-बाप ज्ञान में होते हैं तो बच्चे को भीले आते हैं। लेने वाले कैसे भी कर के चले आते थे। उनको कहते हैं हम तुमको अपने पंचायत से निकाल देंगे। कहते थे अभी निकाल दो। हम अपने ईश्वरीय पंचायत में जावेंगे। और ही अच्छा है। तो यह सभी ड्रामा में पार्ट था। कंस पुरी को छोड़ चले गये। जहां बहुत ही आराम से जाकर रहे। समझाते यह तो सफेद पोशधारी खुदा प्रस्त हैं। पवित्र और खुदाप्रस्त। सिर्फ एक बाप को याद करने वाले। कितना आराम से रहे पड़े थे। तुम्हारी सम्भाल करने वाला बाप था। निडर रहते थे। डर की कोई बात ही नहीं। इसको कहा जाता है भट्ठी। फिर कोई फर्स्ट क्लास निकले; कोई कच्चा कोई कैसे। रुपये भी कोई सच्चे कोई झूठे निकलते हैं ना। ठप्पा तो सभी पर लग जाता है। सब एक जैसा ठप्पा नहीं करते हैं। तुम बच्चों पर भी शिव बाबा का ठप्पा तो लगता है। पूरा ठप्पा उन पर लगता है जो विजय माला के दाना बनते हैं। बाप तुम बच्चों को मुक्तिधाम में ले जाते हैं। कोई योगबल से हिसाब किताब चुक्त कर जाते हैं, कोई सजा खाकर जाते हैं। हिसाब-किताब तो सभी चुक्त होना है ना। फिर पद भी ऐसा मिलता है। इसलिए बाबा कहते हैं खूब पुरुषार्थ करो। माया सभी को नाक से पकड़ लेती है। विधवा होंगी तो भी क्रिमनल आई हो जावेंगी। जैसे विधवा बन जाती है। बाप कहते हैं वेश्यालय रूपी आंखों को शिवालय रूपी आंख बनाओ। जैसे इन ल० ना० के हैं। इनकी कब क्रिमनल आई हो न एके। रावण राज्य में आंखें बड़ा धोखा देती है। फिर बहुत मेहनत करनी पड़ती है। अच्छा बच्चों को याद प्यार गुडमार्निंग। नमस्ते।